

राजस्थान में ज़िका वायरस

चर्चा में क्यों?

राजस्थान के जयपुर में ज़िका वायरस के 22 मामलों की पुष्टि के बाद सरकार ने पड़ोसी राज्यों में हाई अलर्ट जारी कर दिया है। आईसीएमआर की नगिरानी प्रणाली के माध्यम से जयपुर में इस बीमारी के प्रकोप की जानकारी मिली है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, पहले मामले की जानकारी मिलने के तुरंत बाद 7 सदस्यों की उच्चस्तरीय केंद्रीय टीम बीमारी को नियंत्रित करने में राज्य सरकार की सहायता के लिये जयपुर रवाना की गई है।

प्रमुख बडि

- ज़िका वायरस पर हाई अलर्ट जारी करते हुए हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, मध्य प्रदेश और गुजरात समेत पड़ोसी राज्यों को सतर्क कर दिया है।
- केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री के स्तर पर स्थितिकी समीक्षा की जा रही है और स्वास्थ्य सचिव द्वारा इसकी नगिरानी की जा रही है।
- स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक (डीजीएचएस) के नेतृत्व में तकनीकी विशेषज्ञों के एक उच्चस्तरीय संयुक्त नगिरानी समूह की दो बार बैठक हुई है। 05 अक्टूबर, 2018 से उच्चस्तरीय केंद्रीय टीम बीमारी पर नियंत्रण और नगिरानी के लिये जयपुर में है।
- राष्ट्रीय बीमारी नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) में नियंत्रण कक्ष कार्य कर रहा है ताकि स्थिति पर नियमि रूप से नज़र रखी जा सके।
- चनिहति क्षेत्र में सभी संदिग्ध मामलों तथा मच्छरों के नमूनों की जाँच की जा रही है। वायरल शोध तथा निदान प्रयोगशालाओं को जाँच हेतु अतिरिक्त कटि प्रदान किये जा रहे हैं।
- राज्य सरकार को ज़िका वायरस बीमारी और रोकथाम के बारे में जागरूकता फैलाने के लिये आईईसी सामग्री भेजी गई है।
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य मशिन (एनएचएम) के माध्यम से क्षेत्र की सभी गर्भवती महिलाओं की नगिरानी की जा रही है। राज्य सरकार क्षेत्र में व्यापक नगिरानी तथा मच्छर नियंत्रण के उपाय कर रही है।

ज़िका वायरस रोग

- ज़िका वायरस बीमारी नई है और विश्व के 86 देशों में यह बीमारी पाई गई है। ज़िका वायरस बीमारी के लक्षण डेंगू जैसे वायरल संक्रमण की तरह हैं।
- बीमारी के लक्षणों में बुखार आना, त्वचा पर लाल चकत्ते उभरना, आँख में जलन होना, मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द, बैचेनी और सरिदर्द आदि शामिल हैं।
- भारत में पहली बार यह बीमारी जनवरी/फरवरी, 2017 में अहमदाबाद में फैली और दूसरी बार 2017 में यह बीमारी तमलिनाडु के कृष्णागिरी ज़िले में पाई गई। दोनों ही मामलों में सघन नगिरानी और मच्छर प्रबंधन के ज़रिये इस पर सफलतापूर्वक काबू पा लिया गया।
- यह बीमारी केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के गहन नगिरानी में है। यद्यपि 18 नवंबर, 2016 की विश्व स्वास्थ्य संगठन की अधिसूचना के अनुसार यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चिंता की स्थिति नहीं है।

क्या हो सकता है खतरा?

- वायरस संक्रमित महिला के गर्भ में फैल सकता है और शिशुओं में माइक्रोसफेली तथा अन्य गंभीर मस्तषिक रोगों का कारण बन सकता है।
- वयस्कों में यह गुलैन-बैरे सिड्रोम का कारण बन सकता है, जिसमें शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली नसों पर हमला करती है और कई जटलिताओं की शुरुआत होती है।

अब तक इसके लिये कोई वैक्सीन या दवा नहीं बनी। यह वायरस सबसे ज़्यादा गर्भवती और गर्भ में पल रहे बच्चों पर अटैक करता है।